

आर्य

उत्तमः श्री आर्यमा  
नवययधत्रीगज  
टीभक्तयलावनका  
मामिशुलाकत्रीत  
उज्जगविरुषधवी



नार्यमानविठाकरु  
वर्मयदारु कथुऊक  
धकनालमूर्खीयध  
ऊटींग १ राजूतिनोड  
पट्टमद्यनिनादविष्

५

नारा



वज्र

नका। धप्रवल्गुप्रिका। धमर्कि। बाजभनेमल्यका। धनीलद

॥ धवायवचमहावर्ल॥ १३॥ प्रमर्क। धमकाव्याफादिप्रिदिह

हि। मारुव॥ धवष्टधिवीमधुर्लरुवकुशीवज्रसत्त्वकवचवध

॥ ॐ मिथीवज्रसत्त्वकवचनामध्ववधीयविस्मार्क

॥ ॥ यधर्माद्यादि॥ ४॥

॥ धीय। धुर्ल॥ ध। सत्त्व

धर्मरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

II-65